Mahendra's

UP POLICE कांस्टेबल/ UP लेखपाल

HINDI

वाच्य

भाग–2

LIVE 03:00 PM

वाच्य (Voice)

क्रिया के उस परिवर्तन को वाच्य कहते हैं, जिसके द्वारा इस बात का बोध होता है कि वाक्य के अन्तर्गत कर्ता, कर्म या भाव में से किसकी प्रधानता है।

अथवा

क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि उसके प्रयोग का आधार कर्ता, कर्म या भाव है, उसे वाच्य कहते हैं। हैं –

वाच्य के भेद -

(1) कर्तृवाच्य (Active Voice)
(2) कर्मवाच्य (Passive Voice)
(3) भाववाच्य (Impersonal Voice)

1. कर्तृवाच्य	2. कर्मवाच्य	3. भाववाच्य
↓	↓	↓
क्रिया का मुख्य संबंध कर्ता के साथ	क्रिया का मुख्य संबंध कर्म के साथ	क्रिया का मुख्य संबंध भाव के साथ अर्थात क्रिया खुद ही मुख्य हो जाए

क्रिया-जिन शब्दों से किसी कार्य का होना या करना व्यक्त होता है, उन्हें क्रिया कहते हैं, जैसे- खाना, पीना, सोना, हँसना ।

क्रिया के भेद-रचना की दृष्टि से क्रिया के दो भेद हैं -

1.सकर्मक क्रिया- जो क्रिया कर्म के साथ आती है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं, जैसे -

मोहन फल खाता है।

सीता गीत गाती है।

2.अकर्मक क्रिया- अकर्मक क्रिया के साथ कर्म नहीं होता तथा उसका फल कर्ता पर पड़ता है, जैसे -

राधा रोती है।

मोहन हँसता है।

1. कर्तृवाच्य- जिस वाक्य में कर्ता की प्रमुखता होती है अर्थात क्रिया का प्रयोग कर्ता के लिंग, वचन, कारक के अनुसार होता है और इसका सीधा संबंध कर्ता से होता है तब कर्तृवाच्य होता है।

जैसे—मोहन फल खाता है।

(कर्ता–एकवचन, पुल्लिंग) → (क्रिया–एकवचन पुल्लिंग)

लड़कियाँ गीत गाती हैं।

(कर्ता–बहुवचन स्त्रीलिंग) → क्रिया–बहुवचन

अर्थात इन वाक्यों में क्रिया के प्रयोग का आधार इनके कर्ता हैं।

अत: ये कर्तृवाक्य हैं।

2. कर्मवाच्य-

जिस वाक्य में कर्म की प्रधानता होती है तथा क्रिया का प्रयोग कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होता है और कर्ता की स्थिति में स्वयं कर्म होता है, वहाँ कर्मवाच्य होता है।

जैसे –

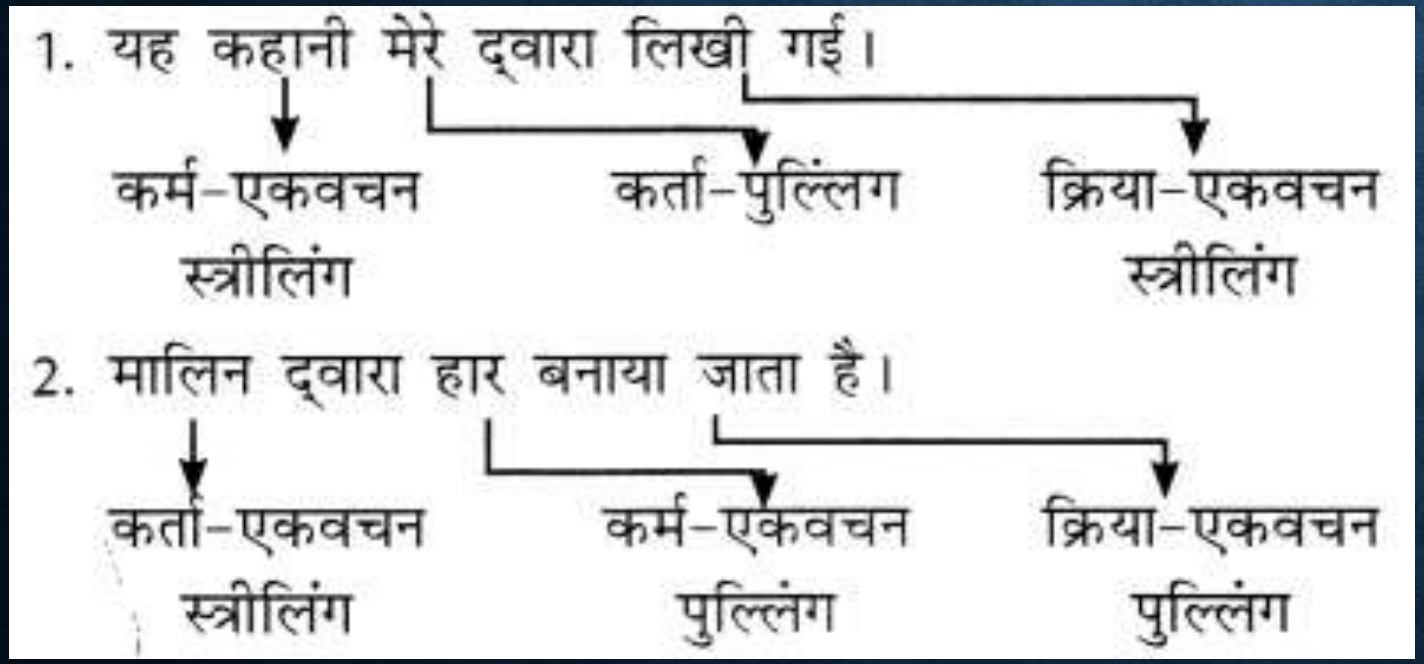

अन्य उदाहरण –

- मोहन के द्वारा लेख लिखा जाता है।
- हलवाई द्वारा मिठाइयाँ बनाई जाती हैं।
- चित्रकार द्वारा चित्र बनाया जाता है।
- रूपाली द्वारा कढ़ाई की जाती है।

3.भाववाच्य –

इस वाच्य में कर्ता अथवा कर्म की नहीं बल्कि
भाव अर्थात् क्रिया के अर्थ की प्रधानता होती है;
अथवा
क्रिया के जिस रूप में न तो कर्ता की प्रधानता हो
न कर्म की, बल्कि क्रिया का भाव ही प्रधान हो,
वहाँ भाववाच्य होता है।

जैसे –
मरीज से उठा नहीं जाता।
पहलवान से दौडा नहीं जाता।
मोहन से टहला भी नहीं जाता।
मुझसे उठा नहीं जाता।
धूप में चला नहीं जाता।

वाच्य के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण बिंदु-

- कर्तृवाच्य में अकर्मक और सकर्मक दोनों प्रकार की क्रिया का प्रयोग किया जाता है।
- कर्मवाच्य में कर्म उपस्थित रहता है और क्रिया सकर्मक होती है।
- भाववाच्य – कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य
- इस वाच्य में प्रायः नकारात्मक वाक्य होते हैं।
- भाववाच्य में अकर्मक क्रिया का प्रयोग होता है।
- भाववाच्य में प्रयुक्त क्रिया सदा पुल्लिंग अकर्मक और एकवचन होती है।

- ऐसी धूप में कैसे चला जाएगा।
- विधवा से रोया भी नहीं जाता।
- इस मोटे व्यक्ति से उठा नहीं जाता।

वाच्य-परिवर्तन

वाच्य परिवर्तन के अंतर्गत तीनों प्रकार के वाच्यों को परस्पर परिवर्तित किया जाता है -

1.कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाना-

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाने के लिए –

(i) यदि कर्ता के बाद 'ने' लगा है तो उसे हटाकर द्वारा, से, के द्वारा लगाया जाता है।

(ii) क्रिया का प्रयोग कर्म के लिंग, पुरुष और वचन के अनुसार करके 'जा' धातु को उचित रूप जोड़ देते हैं ।

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
1. हालदार साहब ने पान खाया।	हालदार साहब द्वारा पान खाया गया।
2. मरीज पानी नहीं पी सकता।	मरीज से पानी नहीं पिया जाता।
3. अब आप गाना गाएँ ।	अब आपके द्वारा गाना गाया जाए।
4.कुम्हार मिट्टी के बर्तन बनाता है।	कुम्हार द्वारा मिट्टी के बर्तन बनाए जाते हैं।

2.कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य (Passive to Active)

कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य में परिवर्तन के लिए निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिए-

(1) कर्त्ता के अपने चिह्न (०, ने) आवश्यकतानुसार लगाना चाहिए।

(2) यदि वाक्य की क्रिया वर्तमान एवं भविष्यत् की है तो कर्तानुसार क्रिया की रूप रचना रखनी चाहिए।

(3) भूतकाल की सकर्मक क्रिया रहने पर कर्म के लिंग, वचन के अनुसार क्रिया को रखना चाहिए।

कर्मवाच्य	कर्तृवाच्य
1.किसान द्वारा खेत में खाद डाली जाती है।	किसान खेत में खाद डालते हैं।
2.एडिसन द्वारा बल्ब का आविष्कार किया गया	एडिसन ने बल्ब काआविष्कार किया।
3. किया लोगों द्वारा मंत्री का स्वागत गया।	लोगों ने मंत्री का स्वागत किया।
4.नेता जी द्वारा अदालत में गवाही दी गई।	नेता जी ने अदालत में गवाही दी।

(3) कर्तृवाच्य से भाववाच्य (Active voice to Impersonal Voice)

- कर्त्ता के साथ से/द्वारा चिह्न लगाकर उसे गौण किया जाता है।
- मुख्य क्रिया को सामान्य क्रिया एवं अन्य पुरुष पुल्लिंग एकवचन में स्वतंत्र रूप में रखा जाता है।
- भाववाच्य में प्रायः अकर्मक क्रियाओं का ही प्रयोग होता है।

क्र. सं.	कर्तृवाच्य	भाववाच्य
1.	यह तैराक तेज़ तैरता है।	इस तैराक द्वारा तेज़ तैरा जाता है।
2.	घायल व्यक्ति उठ नहीं सका।	घायल व्यक्ति से उठा नहीं जाता।
3.	मैं प्रतिदिन नहाता हूँ।	मेरे द्वारा प्रतिदिन नहाया जाता है।
4.	चलो घूमने चलते हैं।	चलो, घूमने चला जाय।
5.	बच्चे शांत नहीं बैठ सकते।	बच्चों द्वारा शांत नहीं बैठा जाता।
6.	विनय जोर-जोर से हँस रहा है।	विनय द्वारा ज़ोर-ज़ोर से हँसा जा रहा है।
7.	नाविक नदी में तैर रहा था।	नाविक द्वारा नदी में तैरा गया।

क्र. सं.	भाववाच्य	कर्तृवाच्य
1.	मुझसे इस पेड़ पर नहीं चढ़ा जाएगा।	मैं इस पेड़ पर नहीं चढ़ सकता।
2.	तुमसे बरफ़ से शीतल पानी में नहीं नहाया जाएगा।	तुम बरफ़ से शीतल पानी में नहीं नहा सकोगे।
3.	ऐसी सरदी में रात भर कैसे बैठा जाएगा।	ऐसी सरदी में रात भर कैसे बैठेंगे।
4.	कुत्तों द्वारा ज़ोर से भौंका जा रहा है।	कुत्ते जोर से भौंक रहे हैं।
5.	कुत्ते के द्वारा बिल्ली के पीछे भागा जा रहा है।	कुत्ते बिल्ली के पीछे भाग रहे हैं।
6.	घायल सैनिक से बोला भी नहीं जा रहा है।	घायल सैनिक बोल नहीं पा रहा है।
7.	उसके द्वारा पार्क में प्रतिदिन दौड़ा जाता है।	वह पार्क में प्रतिदिन दौड़ता है।
8.	इस घने जंगल में सारा दिन कैसे बिताया जाएगा।	इस घने जंगल में सारा दिन कैसे बिताएँगे।
9.	घायल हंस से उड़ा न गया।	घायल हंस उड़ न पाया।
10.	विधवा से रोया भी न जा सका।	विधवा रो न सकी।

1.महेश पत्र लिखता है ,कर्तृवाच्य से कर्म वाच्य में परिवर्तन कीजिये

1.महेश के द्वारा पत्र लिखा जाता था।
2.महेश के द्वारा पत्र लिखा गया है।
3.महेश के द्वारा पत्र लिखा जा रहा होगा
4.महेश के द्वारा पत्र लिखा जाता है।

2 .आप गाना गाइए , कर्तृवाच्य से कर्म वाच्य में परिवर्तन कीजिये

1.आपके द्वारा गाना गया गया था।
2.आपके द्वारा गाना गया जायेगा।
3.आपके द्वारा गाना गया जाय।
4.आप द्वारा गाना गया जाय।

3.कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य बनाइये –
"लोगों द्वारा मंत्री का स्वागत गया।"

1.लोगों ने मंत्री का स्वागत कियाथा ।
2.लोगों ने मंत्री का स्वागत किया।
3.लोगों द्वारा मंत्री का स्वागत गया।
4.लोगों ने मंत्री का स्वागत किया होगा।

4.कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य बनाइये – “पुलिस द्वारा लाठी चार्ज किया गया । ”

1.पुलिस ने लाठी चार्ज किया ।
2.पुलिस ने लाठी चार्ज किया होगा ।
3.पुलिस ने लाठी चार्ज किया ।
4.पुलिस द्वारा किया गया था लाठी चार्ज ।

5.वाच्य कितने प्रकार के होते हैं -

1. 3
2. 4
3. 5
4. 6

6.जिस वाक्य में क्रिया का कर्ता प्रधान हो उस वाक्य कि क्रिया में किसकी प्रधानता होगी

(1)कर्तृवाच्य (Active Voice)
(2) कर्मवाच्य (Passive Voice)
(3) भाववाच्य (Impersonal Voice)
(4)इनमें से कोई नहीं

7.जिस वाक्य में क्रिया का कर्म प्रधान हो उस वाक्य कि क्रिया में किसकी प्रधानता होगी

(1)कर्तृवाच्य (Active Voice)

(2) कर्मवाच्य (Passive Voice)

(3) भाववाच्य (Impersonal Voice)

(4)इनमें से कोई नहीं

8.जिस वाक्य में क्रिया का भाव प्रधान हो उस वाक्य कि क्रिया में किसकी प्रधानता होगी

(1)कर्तृवाच्य (Active Voice)
(2) कर्मवाच्य (Passive Voice)
(3) भाववाच्य (Impersonal Voice)
(4)इनमें से कोई नहीं

9. कथावाचक द्वारा गीता का रहस्य समझाया गया। कर्त वाच्य में परिवर्तन कीजिये -

1.कथावाचक ने गीता का रहस्य समझायागया था।
2.कथावाचक को गीता का रहस्य समझाया।
3.कथावाचक ने अच्छे से गीता का रहस्य समझाया।
4.कथावाचक ने गीता का रहस्य समझाया।

10.“अक्षर से एक भी गेंद नहीं फेंकी गई।” वाक्य में कौन सा वाच्य हैं ?

(1) कर्तृवाच्य
(2) कर्मवाच्य
(3) भाववाच्य
(4) कर्तृवाच्य एवं कर्मवाच्य

(1) क्रिया -विशेषण चार प्रकार के होते हैं-

(i)स्थानवाचक-

(अ) स्थितिवाचक-यहाँ, वहाँ, भीतर, बाहर।

(ब) दिशावाचक-इधर, उधर, दाएँ, बाएँ।

(ii) रीतिवाचक-

(1) कारणबोधक: इसलिए, अतएव, क्यों,

(2) निषेधबोधक : नहीं, मत

(3) स्वीकारबोधक: हाँ, जी अच्छा, अवश्य, ठीक, बेशक

(4) निश्चयबोधक वस्तु : निःसन्देह, यथार्थतः, अवश्य, बेशक, अलबत्ता, ज़रूर

(5) अनिश्चयबोधक यथासम्भव, कदाचित्, सम्भवतः, शायद,

(6) प्रश्नबोधक: कहाँ, क्यों, कब क्या

(iii) परिमाणवाचक (मात्रात्मक) विशेषण-

(अ) अधिकताबोधक- बहुत, खूब, अत्यन्त, अति (ब) न्यूनताबोधक-जरा, थोड़ा, किंचित्, कुछ (स) पर्याप्तिबोधक-बस, यथेष्ट, काफी, ठीक (द) तुलनाबोधक- कम, अधिक, इतना, उतना (य) श्रेणिबोधक-बारी-बारी, तिल-तिल, थोड़ा-थोड़ा

(iv) कालवाचक विशेषण -

(अ) समयवाचक- -आज, कल, अभी, तुरन्त (ब) अवधिवाचक - रात भर, दिन भर, आजकल, नित्य(स) बारम्बारतावाचक- हर बार, कई बार, प्रतिदिन

सम्बन्धबोधक (Preposition)-

जिसके द्वारा वाक्य में किसी संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्द का सम्बन्ध किसी अन्य शब्द भेद के साथ प्रकट हो, उसे 'सम्बन्धबोधक' कहते हैं।

उदाहरण के लिए,

पूर्वा छत पर खड़ी है।

पूर्व वृक्ष के नीचे बैठा है।

सम्बन्धबोधक अव्यय-

आगे, पीछे, बीच, परे, सामने, ऊपर, नीचे, मध्य, दरम्यान,
समीप, निकट, नजदीक, पास, भीतर, बाहर, अन्दर, नीचे,
ऊपर, तले
आगे, पीछे, पूर्व, पहले, तक, बीच, आस-पास, लगभग,
बाद,उपरान्त, पश्चात् ,प्रति, आस-पास, पार, आर-पार, तरफ़,
ओर ज़बानी, सहारे, कर, द्वारा, ज़रिये, निमित्त,
मार्फत,निमित्त, लिए, लाहिने, फारे, कारण, चलते, ख़ातिर,
हेतु, वास्ते ,भरोसे, जान, बाबत, निस्बत, नाम, लेखे, विषय
रहित, विहीन, बिना, गैर, अलावा, अतिरिक्त सिवा ,एवज,
पलटे, बदले, जगह इत्यादि

समुच्चयबोधक (Conjunction)-

जो अव्यय दो शब्दों, वाक्यों अथवा वाक्य-खण्डों को एकत्र कर उनका पारस्परिक योग अथवा पृथकत्व सूचित करे, उसे 'समुच्चयबोधक' कहते हैं। उदाहरण के लिए,

1. राम ने खाना खाया और सो गया।
2. उसने बहुत समझाया लेकिन किसी ने उसकी बात नहीं मानी।
3. अगर तुम बुलाते तो मैं जरुर आता।

समुच्चयबोधक अव्यय के 2 मुख्य भेद हैं,-

1. समानाधिकरण
2. व्याधिकरण

1. समानाधिकरण :दो मुख्य वाक्यों को जोड़नेवाले अव्यय को 'समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय' कहते हैं। जैसे - और, व, तथा, भी, अथवा, किंवा, या, चाहे, न कि, लेकिन, किन्तु, मगर, पर, बल्कि, अपितु,

2.व्याधिकरण : जिन अव्ययों के द्वारा मुख्य वाक्य में आश्रित/ उपवाक्य जोड़े जाते हैं, वे 'व्याधिकरण समुच्यबोधक अव्यय' कहलाते हैं। जैसे - कि, चूँकि, क्योंकि, इसलिए कि, कारण कि, जो कि,ताकि, जो, इसलिए,

विस्मयादिबोधक (Interjection or Exclamatory)-

जो शब्द हृदय में अचानक उठनेवाले भावों को प्रकट, करे, वह 'विस्मयादिबोधक' कहलाता है। इनका सम्बन्ध वाक्य में किसी दूसरे शब्द के साथ नहीं रहता।
उदाहरण के लिए,
हाहा!, वाह-वाह!, जय! शाबाश! धिक् ! छिः छिः! बाप रे! राम-राम ! मेरे अल्लाह ! ओ गॉड! बाप रे बाप! तोबा-तोबा!, अरे ! वाह ! ओहो! हैं! क्या! सच! लो! त्राहि-त्राहि ! ओफ्फ! आह ! ओह ! उफ्फ! सी! हाँ! इत्यादि ,शाबाश! वाह-वाह! वाह ! धन्य! जय ! अहा ! ओह ! ,काश! कदाचित् शाबाश! वाह ! अच्छा! अवश्य! जी! हाँ! ठीक! बहुत अच्छा ! ,आक् थू! धिक्! धत् !, छिः हट! अरे! दूर! छि:-छिः! अरे राम! तोबा-तोबा ! ,जी अच्छा! अच्छा जी! हाँ, जी हाँ! ! ठीक! अच्छी बात ! जी-जी , हो! ओ! अरे ! अजी! लो ! अहो ! अहो ,हाय अल्लाह! अरे बाप रे! उई माँ! त्राहि माम्! पाहि माम! बचाओ! दइया रे! दइया-री-दइया! बाप रे बाप! ,बाय-बाय! टाटा! अच्छा! अच्छा जी! ठीक है!

- कारक चिन्हों की संख्या कितनी मानी गई है - 8
- सर्वनाम के कितने भेद माने गये है – 6
- संधि के कितने भेद होते हैं - 3 (स्वर संधि, व्यंजन संधि, विसर्ग संधि)
- दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने नवीन एवं सार्थक शब्द को कहते हैं - समास
- करुण रस का स्थायी भाव है- शोक
- वीर रस का स्थायी भाव है- उत्साह
- संख्या, चरण, क्रम, गति, यति, विराम और तक के आधार पर रचित रचना को क्या कहते है- छन्द
- अभिजात का विलोम शब्द होगा – अवजात
- अछर का विपरीतार्थी शब्द होगा- छर
- अर्वाचीन का विलीय - प्राचीन
- "बिनु पग चले सुनै बिनुकाना |कर बिनु कर्म करै विधी नाना।। मे कौनसा अंलकार है- विभावना अलकार
- शर्वरी का पर्यायवाची शब्द है- रात, निशा, रात्रि, रजनी
- पंचतत्व मे कौन सा समास है - द्विगु समास

स्वर्ग	नरक	क्रोध	क्षमा
स्वल्पायु	चिरायु	क्षणिक	शाश्वत
स्वस्थ	अस्वस्थ	क्षमा	दण्ड
स्वाधीन	पराधीन	क्षम्य	अक्षम्य
स्वामी	सेवक	क्षर	अक्षर
स्वार्थ	निस्वार्थ	क्षुद्र	विशाल
स्वीकृत	अस्वीकृत	क्षुद्र	महत
हँसना	रोना	खंडन	मंडन
हर्ष	शोक	खगोल	भूगोल

धन्यवाद